शेख़ फ़रीद – सबद १२८

कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८४

कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु ॥
कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवै कंतु ॥१२६॥

सार: भीतरी बेचैन आंतरिक खोज उस व्यक्ति की तरह होती है जो साफ़ पानी की तलाश में कई उथले कुएँ खोदता है और लगातार एक जगह से दूसरी जगह भटकता रहता है। हर कोशिश उम्मीद के साथ शुरू होती है लेकिन कोई भी इतनी गहरी नहीं होती कि वह सचमुच पोषणदायक तत्त्व तक पहुँच सके। प्रयास निरंतर जारी रहता है लेकिन उसमें गहराई की कमी बनी रहती है। इस तरह, गति समझ की जगह ले लेती है और खोज सच्ची खोज का स्थान ले लेती है। ज़रूरत किसी दूसरी जगह खोदने की नहीं है बल्कि जहाँ स्वयं खड़े हैं, वहीं और गहराई तक जाने के धैर्य की है।

कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु ॥
वह कौन सा शब्द, कौन सा गुण और कौन सी अनमोल सीख है। यह उस विधि की खोज की ओर संकेत करता है जो उच्च चेतना तक पहुँच सुनिश्चित करती है।

कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवै कंतु ॥१२६॥
ऐसा कौन-सा वेश धारण करूँ कि मेरा आंतरिक स्वत्व मेरे वश में आ जाए। यह अपनी आंतरिक अवस्था को बदलने की उस अभिलाषा को दर्शाता है जिसमें मन एकत्व के साथ जुड़ना चाहता है।

तत्त्व: शेख़ फ़रीद यह समझने की गहरी इच्छा व्यक्त करते हैं कि वह क्या है जो हमारे अंतर्मन को परिवर्तित करती है। वह अलगाव की भावनाओं से ऊपर उठकर ऐसी अवस्था में जागृत होना चाहते हैं, जहाँ उनके विचार, भावनाएँ और अंतरात्मा पूर्ण सामंजस्य में स्थित हों। यह यात्रा हमारे विचारों

पर सजग अधिकार स्थापित करने की प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम एकत्व की उस अवस्था तक पहुँचते हैं जहाँ गहन पूर्णता का अनुभव होता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com